व्यवसाय योजना

हथकरघा

बाबा बालक नाथ सवयं सहायता समूह (गाहर)

(शॉल, स्टॉल, बाडर व मफ़लर)

जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	गाहर
उप-समिति	गाहर
ग्राम पंचायत	सेओबाग
वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी परिक्षेत्र,कुल्लू
वनमंडल	वन्य प्राणी मंडल कुल्लू
वनवृत्त	GHNP Circle , शमशी

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना
(जाईका वित्तपोषित)

विषय –सूची

क0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	3
2	कार्यकारिणी सारांश	3-5
3	स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण व सूची	5-6
4	गांव की भौगोलिक स्थिति का विवरण	6
5	आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण	6
6	उत्पादन की प्रक्रियाऐं	6-8
7	उत्पादन नियोजन	8-9
8	विक्रय तथा विपणन	9
9	सदस्यों के मध्य प्रबन्धन का विवरण	9-10
10	शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)	10-11
11	सम्भावित जोखिम व उनको कम करने के उपाय	11
12	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	12
13	अर्थव्यवस्था का सारांश	12-13
14	अनुमान	13
15	उद्यम हेतूलाभ– लागत विश्लेषण	13
16	धन की आवश्यकता	14
17	धन की आवश्यकता का नियोजन	14-15
18	सम विच्छेदन बिंदु	15
19	ऋण वापिस का किश्तवार नियोजन	15-16
20	समूह के नियम	16-17
21	समूह की सहमति तथा प्रधान, जैव विविधता उपसमिति लोट का अनुमोदन	18
22	समूह के सदस्यों की फोटो	19-20

1. परिचय

हथकरघा उद्योग प्राचीनकाल से ही हाथ के कारीगरों को आजीविका प्रदान करता आया है। भारत में हथकरघा ऊद्योग समय के साथ सबसे महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग व व्यापार के रूप में उभरा है। हथकरघा बुनकर कपास, रेशम और ऊन के शुद्ध रेशों का उपयोग कर उत्पाद तैयार करते रहे हैं। हैंडलूम उद्योग भारत की सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है। पहले कुल्ल्वी लोग सादे शॉल बुनते थे लेकिन हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर से बुशहरी शिल्पकार के आने के बाद पैटर्न वाले हथकरघा का चलन अस्तित्व में आया। बहुत समय पहले तक पुरुष और महिलाएं अपने घरों में पारंपरिक खड्डियों (Pitlooms) में बुनाई का काम करते थे और सार्दियों के लिए परिवार के लिए गर्म कपड़ों की स्वयं व्यवस्था करते थे । उसके बाद हथकरघा का चलन शुरू हुआ, यह संभवत: ब्रिटिश काल में उनके प्रभाव के कारण हुआ। कुल्लू की पारंपरिक बुनाई उत्पादों में दोडू, पट्टू, पट्टी (Tweed), शाल, टोपी के बार्डर व मफलर आदि आते हैं । सत्तर के दशक के पश्चात् पर्यटकों के बढ़ते आगमन व उसमे लगातार होती वृद्धि व पर्यटकों के कुल्लू हस्तशिल्प उत्पादों में रूचि इस कार्य में लगे लोगों खासकर महिलाओं के लिए, जो इस क्षेत्र के बुनकरों का लगभग 70% हैं, की आजीविका का साधन बनता गया । मैदानी क्षेत्रों में बने पावरलूम उत्पादों से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहे शिल्पियों और व्यवसाइयों को अपने उत्पादों के विपणन में कठिनायाँ आ रही है । भारत सरकार तथा राज्य सरकार समय समय पर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में प्रयासरत है ।अभी हाल ही में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर नग्गर के शरण गांव को हैंडलूम क्रॉफ्ट विलेज में शामिल किया गया है। इस गांव में मूलभूत सुविधाओं के सृजन तथा सौंदर्यीकरण पर लगभग 1.40 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। गांव में भव्य हैंडलूम सुविधा केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इसमें तैयार किए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित " हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" (PIHPFEM&L) के माध्यम से पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन के साथ साथ वनों के पास रहने वाले समुदायों की आजीविका में सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं । महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के उनकी रूचि के अनुसार गतिविधियों को चुन कर इन समूहों की सहायता की जा रही है । इस प्रकार की गतिविधियों में एक गतिविधि हथकरघा, जो कुल्लू का पारंपरिक शिल्प है , में भी महिलाओं ने काम करने की इच्छा जताई है । गाहर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी की "सेओबाग-II" उप समिति के "बाबा बालक नाथ" स्वयं सहायता समूह ने हथकरघा की गतिबिधि का चयन किया है जिसके हर पहलू को ध्यान में रख कर इस व्यवसाय योजना को बनाया गया है ।

2 कार्यकारिणी सारांश

हिमाचल प्रदेश के पश्चिम हिमालय में स्थित है। यह राज्य कुदरती सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर से भरपूर है। राज्य में विविध पारितंत्र, नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती है। इसकी आबादी 70 लाख के करीब है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 55673 वर्ग कि० मी० है। हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाडियों से लेकर मध्य हिमालय का क्षेत्र के ऊँचाई व और ठंडे जोन का क्षेत्र पाया जाता है। राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से 7 जिले में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन और आजीविका सुधार परियोजना जाईका (JICA) के सहयोग से चलाई जा रही है। जिसमे कुल्लू ज़िला भी शामिल है।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित) प्रारंभ होने पर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी गाहर की "सेओबाग-II" उप समिति की सूक्षम योजना बनाई गयी है। वन विकास समिति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागवानी है परन्तु प्रत्येक परिवार की औसत भूमि चार बीघा से कम है इसके इलावा सिंचाई के कोई भी साधन नहीं है। अत: अधिकतर लोग जिले के अंदर व जिले के बाहर मजदूरी कमाने जाते हैं तथा सिचांई की उचित

व्यवसाय ना होने के कारण लोगों को उनके आय में आपेक्षित बढोतरी नहीं हो पा रही है। यहाँ के लोग मुख्यत: गेहूं, मक्की, जौ व दालों की खेती करने के साथ सेब, प्लम, नाशपति व खुमानी इत्यादि बागवानी फसले उगाते हैं। आय के वैकल्पिक साधन ना होने के कारण मजदूरी के लिए घर से वाहर जाना पड़ता है। इस समस्या से उबरने के लिए स्वयं सहायता समूह देवता थान शाल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि का कार्य करके अपनी आजीविका बढाने का निर्णय लिया है। आजीविका सुधार योजना गतिविधि के लिए स्थानीय स्वयं सहायता समूह बनाये गए हैं इन में से बाबा बालक नाथ स्वयं सहायता समूह का 10 मार्च 2022 को गठन किया गया है। इस समूह में कुल 15 महिला सदस्य है जो सभी समान्य जाति से सम्बन्ध रखती हैं। इस समान रुची समूह ने विस्तार से चर्चा करने पर शाल, स्टॉल, बॉर्डर व मफलर बनाने व विपणन करने का निर्णय किया है।

इस समूह में 2-3 सदस्य शॉल, स्टॉल और मफलर बुनाई का कार्य पहले से ही कर रही है । उत्पादन के बाद प्रारंभ में विपणन करने के लिए स्थानीय दुकानदारों या थोक विक्रेताओं के साथ समूह को जोड़ा जाएगा। दक्षता व उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ विपणन की संभावनाओं को और अधिक स्तर में खोजने की और इसमें विस्तार की आवश्यकता होगी । समूह के सदस्य सामूहिक तौर पर अधिक मात्रा में उत्पादन करके अपनी आजीविका बढा सकती है।

शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने के लिए कच्चा माल व खड्डीयां स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है तथा विपणन की भी स्थानीय स्तर पर अपार सम्भावना है क्योंकि कुल्लू घाटी में लगभग पूरी साल पर्यटकों का आना जाना रहता है। कुल्लू के शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, टोपी और मफलर आदि की सुन्दरता भारतवर्ष में विख्यात है अत: पर्यटक घर लोटते समय अपने परिवार व मित्रों के लिए उपहार हेतु प्रचुर मात्रा में खरीददारी करते है। प्रारम्भ मैं समूह के सदस्यों को परियोजना शॉल, स्टॉल, बार्डर और मफलर बनाने का प्रशिक्षण दिया जायेगा जिस पर सम्पूरण व्यय परियोजना का होगा जो कि अनुमानित लगभग 60,000 रूपए होगा। इस समूह के सभी सदस्य महिला है। अतः पूंजीगत व्यय के 75 % के बराबर सहायता राशी भी परियोजना देगी। खड्डीयों को गाँव में पहुँचाने व स्थापित करने आदि पर जो खर्च होगा उसे भी परियोजना से किया जायेगा। इसके अतिरिक्त 1,00,000/- परिक्रामी निधि (Revolving Fund) दिया जाएगा। समूह ने तय किया है कि सभी सदस्य नियम व शर्तो के हिसाब से तथा आपसी सहमति से कार्यो व इससे होने वाले लाभों का आपसी बंटवारा करेंगे।

यह व्यवसाय योजना बैच – III मे बनाए गई व्यवसाय योजना के आधार पर समूह के सदस्यों से विस्तार से चर्चा करने के बाद बनाई गयी है। व्यवसाय योजना बनाते समय समूह के सदस्य की सख्यां शॉल, स्टॉल बॉर्डर और मफलर बनाने की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धता मांग व विपणन को ध्यान में रखकर 56 शॉल, 100 स्टॉल और 135 मफलर प्रतिमाह तैयार करने की व्यवसाय योजना बनाई है। समूह औसतन वर्षभर 4-5 घंटे प्रतिदिन का समय निकालकर उपरोक्त उत्पादों का उत्पादन करेगा। मार्च के मध्य से नवम्बर तक खेती बाड़ी के कार्यों से कम समय मिलेगा परन्तु शेष महीनों में इस गतिविधि के कार्यों के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध होगा ।

3. स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण

3.1	स्वयं सहायता समूह का नाम	बाबा बालक नाथ
3.2	जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	गाहर
3.3	उपसमिति का नाम	सेओबाग-II
3.4	वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.5	वन मण्डल	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.6	गांव	सेओबाग
3.7	विकास खण्ड	कुल्लू

3.8	जिला	कुल्लू
3.9	समूह के कुल सदस्यों की संख्या	15 महिलाएं
3.10	समूह के गठन की तिथि	10/03/2022
3.11	समान रूचि समूह की मासिक बचत	50/-
3.12	बैंक का नाम और शाखा जंहा समूह का खाता संचाालित	पंजाब नेशनल बैंक सेओबाग
3.13	बैंक खाता संख्या	2430000100212775
3.14	समूह की कुल बचत	10000
3.15	समूह द्वारा सदस्यों को दिया गया ऋण	अभी तक नही
3.16	कैश कैडिट सीमा समूह सदस्यों द्वारा वापस किया गया ऋण की स्थिति	–

समूह में सम्मिलित सदस्यों का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :

कमांक	लाभार्थी का नाम व पता सुश्री/श्रीमती	पिता/ पति नाम श्री	पद	लिंग	श्रेणी	सम्पर्क
1	कांता देवी	राम लाल	प्रधान	पुरुष	SC	8626837923
2	चंद्रा वती	निरत राम	सचिव	स्त्री	SC	7018424006
3	गुड्डी देवी	फ़तेह चन्द	कोषाध्यक्ष	स्त्री	SC	8628918317
4	सीता देवी	भोज राज	सदस्य	पुरुष	SC	8629090436
5	चंद्रा देवी	तिलक राज	सदस्य	पुरुष	SC	7807168094
6	कृष्णा देवी	राजू	सदस्य	स्त्री	SC	9036416734
7	रामी	डोले राम	सदस्य	स्त्री	SC	9882845332
8	ओमी देवी	नानक चन्द	सदस्य	स्त्री	SC	9882845332
9	द्रोपती	राम लाल	सदस्य	पुरुष	SC	8350934948
10	दुर्गा	अनूप राम	सदस्य	पुरुष	SC	9805173203
11	प्रेमा	रोशन लाल	सदस्य	स्त्री	SC	7876677641
12	शांता	देवी चन्द	सदस्य	पुरुष	SC	-
13	दलपतु	झाबे राम	सदस्य	पुरुष	SC	-
14	सोमी	प्रेमी	सदस्य	महिला	SC	7876926956
15	निर्मला	चमन लाल	सदस्य	महिला	SC	8350934948

4. गांव की भौगोलिक स्थिति

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	10 कि0मी0
4.2	मुख्य सड़क से दूरी	3 कि0मी0
4.3	स्थानीय बाजार का नाम और दूरी	कुल्लू 10, भुन्तर 15 कि0मी0
4.4	मुख्य बाजार से दूरी और नाम	कुल्लू 10 कि0मी0
4.5	अन्य प्रमुख शहरों और कसबों से दूरी	कुल्लू 10 कि0मी0

		मनाली 35 कि0मी0 भुन्तर 15 कि0मी0
4.6	बाजार / बाजारों से दूरी जहां पर उत्पादन की बिक्री की जायेगी	कुल्लू 10 कि0मी0 मनाली 35 कि0मी0 भुन्तर 15 कि0मी0
4.7	ग्राम के सम्बन्ध में अन्य कोई विशिष्ठता जो समूह द्वारा चयनित आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित हो	1-2 सदस्य पहले से हथकरघा बुनाई से अवगत हैं

5. आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण

5.1	उत्पाद का नाम	शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, और मफलर
5.2	उत्पाद की पहचान की पद्वति	समूह का 1-2 सदस्य अपने स्तर पर पहले से ही शाल, स्टाल व बॉर्डर बुनाई का कार्य करती है व उत्पादित समान को स्थानीय बाजार में भारी मांग है। समूह में उत्पादन व विपणन करने पर अतिरिक्त आय की आपार सभावना है।
5.3	समान रूचि समूह के सदस्यों की सहमति	हां (सहमति पत्र संलगन है।)

6. उत्पादन की प्रक्रियाओं का विवरण

सर्व प्रथम समान रूची समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाऐगा। प्रशिक्षण के उपरान्त समूह के सदस्यों द्वारा उत्पाद तैयार करने में निम्न प्रक्रिया की जाऐगीः–

1. शाल, स्टॉल, का ताना व वाना, वार्पिग मशीन के द्वारा खरीद के स्थान पर ही विक्रेता द्वारा लगवाऐगें। इससे समय और उत्पादों की मज़दूरी दर का खर्चा कम होगा।
2. समूह में सभी सदस्य आपस में कार्य का बटवारा करके शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने का कार्य करेगें।
3. सदस्य बारी–बारी विपणन करेगें व कच्चा माल भी लाऐंगे।
4. समूह के सदस्य प्रति दिन औसतन 4 से 5 घण्टे कार्य करेगें।
5. प्रत्येक सदस्य द्वारा समूह के कार्यों पर लगाये समय का ब्योरा रखा जायेगा।

प्रशिक्षण के उपरान्त समूह द्वारा निम्नलिखित उत्पादों का कार्य किया जाऐगा। जिसका विवरण इस प्रकार से है :

1. <u>शॉल</u>

कुल्लू शाल अपने ज्यामितीय पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। विशिष्ट कुल्लू शॉल के दोनों सिरों पर ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। ज्यामितीय डिजाइनों के अलावा, शॉल फूलों के डिजाइनों में बुने जाते हैं, जो केवल कोनों पर या सीमाओं पर ही होते हैं। प्रत्येक डिज़ाइन में एक से 8 रंग हो सकते हैं। परंपरागत रूप से, चमकीले रंग, जैसे लाल, पीले, मैजेंटा गुलाबी, हरे, नारंगी, नीले, काले और सफेद रंग का इस्तेमाल पैटर्निंग के लिए किया गया था और सफेद, काले और प्राकृतिक भूरे रंग को इन शॉलों में आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था । लेकिन वर्तमान समय में ग्राहकों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चमकीले रंगों को धीरे-धीरे पेस्टल रंगों से बदला जा रहा है। विभिन्न रंगों में रंगे मिल स्पून यार्न का उपयोग जमीन के लिए किया जाता है, जबकि सीमा में पैटर्न के लिए ऐक्रेलिक रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ये शॉल भेड़ की ऊन, अंगोरा, पश्मीना, याक ऊन और हाथ से बनी सामग्री में उपलब्ध हैं। शॉल की कीमत ऊन की गुणवत्ता और उसमें इस्तेमाल किए गए पैटर्न की संख्या और चौड़ाई पर निर्भर करती है। इनमे लगने वाले धागों की किसम , रंग, डिज़ाइन आदि का चयन बाज़ार की मांग पर निर्भर करेगा । विभिन्न डिजाईनों की शॉले सात सदस्यों द्वारा तैयार की जाएगी। अनुमान है कि प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 2 दिन में 1 शॉल तैयार कर सकती हैं। सात सदस्य एक महीने में 56 शॉल बना सकते हैं।

2. स्टॉल

स्टोल एक महिला का शॉल है, विशेष रूप से महंगे कपड़े का औपचारिक शॉल। स्टोल का उपयोग परिष्कृत और फैशन के प्रति जागरूक महिलाएं करती हैं। इसे शॉल की तरह शरीर के चारों ओर लपेटा जा सकता है या कंधों से लटकाया जा सकता है। एक स्टॉल आमतौर पर शॉल की तुलना में लम्बाई व चौड़ाई में छोटा होता है । विभिन्न डिजाईनों की स्टॉल पांच सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा । प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 1 दिन में 1.3 स्टॉल तैयार कर सकती है। इस प्रकार पांच सदस्य एक महीने में 100 स्टॉल तैयार कर सकते हैं।

3. बार्डर (बुलन / कैशमीलॉन)

कुल्लू शॉल की एक विशिष्ट विशेषता पार्श्व सिरों पर क्षैतिज रूप से चौड़ाई में चलने वाली धारियाँ या बैंड हैं। ये बैंड, कुछ सेंटीमीटर चौड़े पीले, हरे, सफेद या लाल जैसे शानदार रंगों में बुने हुए पैटर्न की विविधता से सजाए जाते हैं। इससे थोड़े भिन्न आकर के बार्डर का प्रयोग विशिष्ट कुल्ल्वी टोपियों में विभिन्न आकर्षक डिजायनों में होता है जो इसे अलग पहचान देते हैं। बोर्डर की बुनाई का काम 2 सदस्य करेंगे ओर 60 वार्डर तैयार करेंगे

4. मफलर

विभिन्न अवसरों पर विशिष्ट लोगों को सम्मानित करते समय टोपी और मफलर भेंट करना पहाड़ों की परंपरा में सम्मिलित है । विभिन्न डिजाईनों के मफलर एक सदस्य द्वारा तैयार किया जायेगा। एक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घंटे कार्य करने पर प्रत्येक दिन में 2 मफलर तैयार कर सकती है। समूह की एक महिला एक माह में 60 मफ़लर बना पाएंगी।

7. उत्पादन हेतु नियोजन का विवरण

7.1	उत्पादन चक्र (दिनों में) 30 दिन प्रतिदिन 4–5 घंटे कार्य करेगें	56 शॉल 100 स्टॉल 60 मफलर 60 बार्डर
7.2	प्रति चक्र कार्यकताओं की आवश्यकता (संख्या)	7 सदस्य शॉल के लिए 5सदस्य स्टॉल के लिए 1 सदस्य मफलर के लिए 2 सदसय बार्डर के लिए कुल 15 सदस्य
7.3	कच्चे माल का स्त्रोत	कुल्लू, भुन्तर
7.4	अन्य संसाधनों का स्त्रोत	कुल्लू ,मनाली, भुन्तर

❋प्रत्येक उत्पादन की मात्रा का अनुमान सांकेतिक है जिनका उत्पादन बाज़ार की मांग

के अनुसार कम या अधिक करना होगा ।

8	कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन					
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन
1	**शॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	17	800	13600	56 शॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	1.6	500	800	
ग	वार्पिंग मजदूरी		56	25	1400	
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	105	350	36,750	
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		56	25	1400	
	योग				**53,950**	
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	30	800	24000	100 स्टॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	3	500	1500	
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	75	350	26250	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		100	20	2000	
	योग				**53750**	
3	**मफलर ऊनी**					
क	ताना बाना	kg.	6	1500	9000	60 मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	15	350	5250	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		60	15	900	
	योग				**15150**	
3	**बार्डर**					
क	ताना बाना	kg.	2.4	1500	3600	120 बार्डर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10500	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	15	1800	

	योग	**15,900**	

9. विपणन/बिक्री का विवरण

8.1	सम्भावित बाजारों/स्थलों के नाम	कुल्लू, भुन्तर, मनाली
8.2	उत्पाद की बिक्री हेतू गांव से दूरी	कुल्लू 7 कि0मी0 मनाली 35 कि0मी0 भुन्तर 15 कि0मी0
8.3	बाजार में उत्पाद की अनुमानित मांग	उत्पादन से अधिक मांग है।
8.4	बाजार को चिन्हित करने की प्रक्रिया	खुदरा दुकाने में पर्यटकों के द्वारा बड़े पेमाने पर खरीदारी की जाती है तथा स्थानीय निवासियों द्वारा शादी व अन्य समारोहों पर खरीदारी की जाती है |
8.5	मौसम में परिवर्तन के अनुसार उत्पाद की मांग की स्थिति	सर्दी में उत्पादों की मांग बढ जाती है | गर्मियों में पर्यटक द्वारा खरीदारी करने पर सामान्य रहती है |
8.6	उत्पाद के संभावित खरीदार	पर्यटक व स्थानीय निवासी
8.7	क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता	कुल्लू, लाहौल व मण्ड़ी जिला के निवासी
8.8	उत्पाद का विपणन तंत्र	समान रुची समूह को कुल्लू, मनाली और भुंतर के खुदरा दुकानदारों के साथ विपणन के लिए जोड़ा जाएगा तथा मेलों में प्रदर्शनी / स्टॉल लगा कर विपणन किया जाएगा |
8.9	उत्पाद के विपणन हेतु रणनीति	स्थानीय बाज़ार में मांग कम होने पर उत्पादन को मंडी, शिमला के खुदरा दुकानदारों से जोड़ा जाएगा | मांग बढने या कम होने पर उत्पादन को मांग के अनुसार बढाया या कम किया जाएगा |
8.10	उत्पाद का ब्राण्ड नाम	"आदर्श सेओबाग "
8.11	उत्पाद का ‘‘नारा’’	आओ बुनें हम

10. समूह सदस्यों के मध्य प्रबंधन का विवरण

- प्रबन्धन के लिए नियम बनाये जाएगें।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यो का बंटवारा करेंगें।
- बंटवारा कार्य की कुशलता व क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का बंटवारा भी कार्य की गुणवता व कुशलता तथा मेहनत के आधार पर किया जाएगा।
- विपणन में अनुभव रखने वाले सदस्य बारी–बारी से विपणन करेगे।
- प्रधान व सचिव प्रबन्धन का मुल्यांकन एवं अवलोकन समस–समय पर करते रहेगें।
- समान रूप से लाभांश व मजदूरी का बंटवारा करेंगे

11. शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)

शक्ति

1. सभी समूह सदस्य सामान व् अनुकूल सोच रखते है।
2. समूह के कुछ सदस्य छोटे पैमाने उत्पाद बनाने व विपणन का कार्य पहले से कर रही है। जिस से समूह के अन्य सदस्यों को बुनाई व विपणन में असानी होगी।
3. उत्पादन लागत कम है तथा उत्पादन मांग अधिक है।
4. सदस्यों को घर के समीप ही उपलब्ध समय में आय वृद्धि का साधन मिलेगा।

दुर्बलता : -

1. नया समान रुची समूह है।
2. समूह में कार्य करने का अनुभव नहीं है।
3. सदस्यों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है।

अवसर : -

1. समूह में कार्य करने पर बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।
2. स्थानीय बाज़ारों में शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि की पर्यटन क्षेत्र होने के कारण मांग अधिक है।
3. परियोजना द्वारा खड्डी और चरखा इत्यादि खरीदने पर 50% किमत को वहन किया जाएगा ।
4. परियोजना द्वारा हथकरघा का प्रशिक्षण विशेषज्ञ द्वारा मौके पर या प्रशिक्षण संस्थानों में करवाया जाएगा।

जोखिम

1. समूह में आंतरिक झगडे होने पर समूह का कार्य प्रभावित हो सकता है।
2. मांग व पारदर्शता के अभाव में समूह टूटने की सम्भावना हो सकती है।
3. उत्पादों की मांग अधिकतर पर्यटकों के आगमन पर नोर्भर रहेगा।
4. हैंडलूम में स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा

12. संभावित चुनौतियां तथा उनको कम करने के उपायों का विवरण

क0सं0	जोखिमों का विवरण	जोखिम कम करने के लिए उपाय
1	उत्पादों की स्थानीय बाज़ारों में मांग कम होने की सम्भावना हो सकती है। जिसका विक्री व् आय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।	शिमला, मंडी के बाज़ारों के दुकानदारों को विपणन के लिए जोड़ा जाएगा।
2	उत्पाद की गुणवत्ता घटने से विक्री कम हो सकती है।	गुणवत्ता बनाये रखने के लिए समूह को उच्च मापदंड और कौशल अर्जित करना होगा।
3	स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा।	गुणवत्ता व कार्य कौशल बनाये रखना होगा। विपणन की नयी संभावनाओं को तलाशते रहना होगा।

13. परियोजना की अर्थव्यवस्था का विवरण

पूंजीगत व्यय

क्रम सं	नाम	संख्या	दर	कुल लागत	% अंश	परियोजना का अंश	लाभार्थी का अंश
1	खड्डी 50"	8	16000	1,28,000	75/25	96000	32000
2	चरखे (स्टैंड सहित)	8	2000	16000	75/25	12000	4000
	योग			**1,44 ,000**		**1,08,000**	**36,000**

	गतिविधि की अर्थव्यवस्था का व्योरा						
	आवर्ती व्यय						
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन	कुल राशी
1	**शॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	17	800	13600	56 शॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	1.6	500	800		
ग	वार्पिंग मजदूरी		56	25	1400		
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	105	350	36750		
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		56	25	1400		
					53,950		**53,950**
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	30	800	24000	100 स्टॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	3	500	1500		
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	75	350	26,250		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		100	20	2000		
					53,750		**53,750**
3	**मफलर ऊनी**						
क	ताना बाना	kg.	6	1500	9000	60 मफलर	
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	15	350	5250		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		60	15	900		
						योग	**15150**
4	**बार्डर**						

क	ताना बाना	kg.	2.4	1500	3600	120 बार्डर	
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	30	350	10,500		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		120	15	1800		
	योग						**15,900**
	योग						**138750**
2	स्थान का किराया, बिजली बिल आदि				2000		
3	किराया कच्चा माल व तैयार माल लाना ले जाना				2000		
4	अन्य खर्चे (रिपेयर्स स्टेशनरी आदि)				1000		
					5000		**5000**
	योग आवर्ती लागत						**1,43750**
	आवर्ती व्यय (आवर्ती लागत-मजदूरी) 143750-78750						**65000**
	कुल व्यवसाय योजना 1,28,000 +143750						**2,71,750**
4	**अनुमानित आय**						
	प्रत्यक्ष आय						
	शॉल		56	1900	106,400		
	स्टॉल		100	1000	100000		
	मफ़लर		60	400	24000		
	बार्डर		120	150	18000		
	योग प्रत्यक्ष आय				**2,48,400**		
	अप्रतयक्ष बचत या आय यदि कोई हो				19,200		
	कुल अनुमानित आय				2,67,600		**2,67,600**

14	**अर्थव्यवस्था का सारांश**		
	उत्पादन की लागत		
1	आवर्ती व्यय	65000	
2	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक ह्रास	2133	
3	बैंक ऋण पर 12% ब्याज वार्षिक	-	
	योग	**65133**	

- पूंजीगत व्यय का 25% लाभार्थी अंश तथा आवर्ती व्यय समूह के सदसय नगदी के रूप मे जमा करके वहन करेंगे।

15	**वित्तीय सारांश**							
	विक्रय मूल्य की गणना प्रति वस्तु तथा कुल उत्पादन की विक्री से आय							
क्र०सं0	मद	अनुमानित उत्पादन संख्या	उत्पादन की लागत	लाभ प्रतिशत	लाभांश	कुल विक्रेय मूल्य (3+5)	बाज़ार विक्रय दर	कुल उत्पादन की विक्री से आय
1	2	3	4	5	6	7	8	9

1	शॉल	56	964	97.09	936	1900	2100	106400
2	स्टॉल	100	538	85.87	462	1000	1200	100000
3	मफ़लर	60	253	58.10	147	400	500	24000
4	बार्डर	120	133	12.78	17	150	160	18000
	बिक्री से आय का योग							**2,48,400**

16	**मूल्य-लाभ विश्लेषण (एक चक्र =1 महीना)**			
क्र०सं0	**मद**	**राशी**	**कुल राशी**	
	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास	2133	**2133**	
	आवर्ती लागत			
	कमरे का किराया, बिजली खर्चा अदि	2000		
	मजदूरी	78750		
	कच्चा माल व पेकिंग, ड्राई क्लीनिंग आदि व्यय	60000		
	अन्य खर्चे(रिपेयर, स्टेशनरी अदि)	1000		
	परिवेहन खर्चे सामान कच्चा व तैयार	2000		
	योग		**143750**	
	कुल लाभ 2,48,400-(2133+143750)			1,02,517
	उत्पाद विक्री से सकल लाभ(लाभ+मजदूरी+किराया) 102517+78750+2000			1,83267
	एक माह पश्चात् समूह में वितरण योग्य राशी (उत्पादों से आय-(ओसत मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु आवर्ती व्यय)=2,48,400-(0+0+65000)			1,83,400

- पूंजीगत व्यय का 25% समूह के सदस्य नकदी CASH के रूप में देंगे तथा 75% परियोजना द्वारा वहन करेंगे |
- ● 1,00,000 रुपए स्वयं सहायता समूह को बैंक से ऋण लेने के लिए एक परिक्रामी निधि के रूप में प्रदान किया जाएगा।

17	**धनराशी की आवश्यकता**	
क	**समूह की पहले माह की आवश्यकता**	
क्र०सं0	**मद**	**राशी**
1	पूंजीगत व्यय	1,44,000
2	आवर्ती व्यय	65000
	योग	209000
ख	**समूह के वित्तीय साधन**	
क्र०सं0	**वित्तीय प्रबंध का विवरण**	**राशी**
1	परियोजना द्वारा पूंजीगत व्यय का अनुदान	96,000
2	समूह के सदस्यों का नकद योगदान	32,000
4	समूह की वचत	19200
	योग	1,47,200

18. सम विच्छेदन बिन्दू (ब्रेक ईवन प्वाइन्ट) की गणनाः

ब्रेक ईवन पॉइंट

अत: ब्रेक ईवन पॉइंट = 144000/ 102517= 1.4महीना X 30 दिन = 42 दिन

प्रत्येक शॉल, स्टॉल और मफलर के लाभ की गणना पर सम विच्छेदन बिन्दू 42 दिनों में उपरोक्त अनुपात में विक्रय करने पर प्राप्त किया जा सकता है

टिप्पणी

समूह द्वारा 56 शाल ,100 स्टाल 60 मफ़लर ओर 120 बार्डर बनाने से समूह की 181267 रूपय आय होगी जिसमे समूह को 78750 रूपय मज़दूरी के रूप मे ओर 102517 रूपय लाभ के रूप मे होगी | इस प्रकार प्रतयेक सदस्य 4922 रूपय मजदूरी के रूप मे व 6407 रूपय लाभांश के रूप मे महीने मे केवल 4-5 घंटे कार्य करने पर अर्जित करेंगे |

19.

समूह का सहमती पत्र

आज दिनांक 10-11-22 को बाबा बालक स्वयं सहायता समूह की बैठक हुई! बैठक प्रधान श्री कांता देवी की अध्यक्षता में हुई जिसमे समूह के सदस्यों ने सर्व सहमती से निर्णय लिया की आय बढाने के लिए खड्डी का कार्य करने के लिए हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना(जाईका)से जुड़ने की सहमती प्रदान करते है !

समूह के सचिव के हस्ताक्षर

सचिव
...कनाथ स्वयं सहायता समूह
ज़िला कुल्लू (हि०प्र०)

समूह प्रधान के हस्ताक्षर

बाबा बालकनाथ
गाहर ज़िला ...

हस्ताक्षर

प्रधान,
President / Sec. / Treas.
BMC Sub-Committee Gahar
Teh. & Distt. Kullu (H.P.)

Assistant Conservator of Forest
Wild Life Division Kullu

जैव विविधता उप समिति

सवीकृत

Divisional Management Unit Officer
-cum Divisional Forest Officer,
Wild Life Division, Kullu

मंडलीय प्रबंधन इकाई
वन्यप्राणी मंडल कुल्लू

फील्ड तकनीकी यूनिट (FTU)
कुल्लू - मनाली

समान रुची समूह के नियम

1. समूह का काम : हथकरघा (शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, और मफलर)
2. समूह का पता : गाँव कोट , डाकघर दोहरानाला, तहसील और जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश ।
3. समूह के कुल सदस्य : 15
4. समूह की पहली बैठक की तिथि: मासिक
5. समूह में हर 50 रूपए पर 5 रूपए ब्याज होगा।
6. समूह की मासिक बैठक हर माह की 5 तिथि को होगी।
7. समूह के सभी सदस्य हर माह की बचत की गई राशि को समूह में जमा करेगें।
8. स्वंय सहायता समूह की बैठक में सभी सदस्य को शामिल होना पड़ेगा।
9. स्वंय सहायता समूह का खाता हिमाचल प्रदेश ग्रामीण बैंक शाखा दोहरानाला में खोला है खाता संख्या नंबर 2430000100212775 है।
10. समूह की बैठक में गेर हाज़िर रहने के लिए प्रधान व सचिव को उचित कार्य बता कर अनुमति लेनी होगी।
11. समूह में जो बचत की राशी जमा नहीं करवाते या 3 बेठकों तक समूह से गेर हाज़िर रहते है तो उस महिला को समूह से निकाल दिया जाऐगा।
12. समूह में जो व्यक्ति कारण बताए वगेर गेर हाज़िर रहता है तो अगली बैठक उस व्यक्ति के घर में होगी जिसका खर्च उस व्यक्ति को खुद करना होगा अगर दो सदस्य होगें तो खर्च मिल कर देना होगा।
13. भविष्य में स्वंय सहायता समूह के प्रधान व सचिव सर्व सहमति से चुने जाऐगें।
14. प्रधान व सचिव बैंक से लेन देन कर सकते है यह पद एक वर्ष तक मान्य होगा।
15. प्रधान, सचिव या सदस्य समूह के विरूद्व कोई काम नही करेगा समूह की रकम का सदा सदुपयोग करेगें।
16. अगर सदस्य किसी कारणवश समूह को छोड़ना चाहता है अगर इस व्यक्ति ने ऋण लिया है तो समूह को वापिस करना होगा तभी समूह को छोड़ समता है अन्यथा नही
17. ऋण का उदेश्य रकम की चुकोती का समय ऋण की किश्त और ब्याज की दर बैठक में तय की जाएगी।
18. आपातकालीन स्थिति के लिए प्रधान व सचिव के पास कम से कम 1000 रूपये की राशी होनी चाहिए।
19. स्वंय सहायता समूह के रजिस्टर को सभी सदस्यों के सामने पढ़ा व लिखा जाना चाहिए।
20. बड़ें ऋण लेने वालों को एक सप्ताह पहले की सूचना देनी होगी।
21. ऋण जरूरत के समय सभी सदस्यों को मिलना चाहिए।
22. अगर सदस्य बिना कारण से समूह को छोड़ना चाहता है तो उस सदस्य की जमा राशी समूह में बांटी जाएगी।
23. समूह को अपनी मासिक रिपोर्ट प्रति माह तकनीकी क्षेत्रीय इकाई (Field Technical Unit) के कार्यालय में देनी होगी।

स्वयं सहायता समूह के सदस्य :